NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

बारहमासी नींबू की खेती

राधा, एवं डॉ. अतुल यादव

परिचय:

बारहमासी नींबू की खेती में विश्व भर के देशो में से हमारे देश भारत का प्रथम स्थान आता है। और हमारे देश भारत के कई राज्य में बारहमासी नींबू की खेती करते है।इन में से महाराष्ट्र, आंध्रप्रेदश, राजस्थान, असम, हिमाचल प्रदेश, बिहार, एवं गुजरात इन राज्य में बारहमासी नींबू की खेती बड़े पैमाने में करते है और अधिक मुनाफा भी करते है। इस के अलावा भी भारत के कई राज्य में बारहमासी नींबू की विविध किस्मे की खेती करते है।इस नींबू को अंग्रेजी में लेमान के नाम से जाना जाता है। नींबू के पौधे की डाल (साखा)पर छोटे छोटे काटे होते है। नींबू के फूल छोटे छोटे सफ़ेद रंग के होते है। इस के पौधे पर जब फूल में से फल के रुप में नींबू बनते है तब नींबू हरा रंग के होते है और बाद में पक जाने पर हरे रंग से पीले रंग के हो जाते है।

- इस के पौधे की एक बार बुवाई कर के कम से कम 10 साल या 12 साल तक उपज प्राप्त करते है। नींबू में रस भरपूर मात्रा में मौजूद होते है। और इस रस को विविध खाने की शब्जी में एवं आचार में हम उपयोग में लेते है। इन के अलावा शरबत में भी नींबू का रस उपयोग में लेते है।नींबू में विटामिन ए, विटामिन बी, और विटामिन सी, तो अधिक मात्रा में मौजूद होता है। इस लिए नींबू की मांग पुरे साल भर रहती है लेकिन जब गर्मी का मौसम आता है तब तो नींबू की मांग बढ़ती ही जाती है।गर्मी के मौसम में जब आप नींबू में से रस निकाल के शरबत बना के पीते है तब गर्मी से शरीर को काफी रहत मिलती है।
- नींबू का रस मानव शरीर में खुब उपयोगी है जैसे की वजन घटाने में, बालो की देखभाल में, त्वचा की देखभाल, गले में संक्रमण में, बुखार का इलाज में, ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करता है, शरीर की भारी थकान में पैरो को काफी आराम मिलता है और दाँतों की देखभाल इस प्रकार मानव शरीर में की रोग एवं बीमारी में नींबू का रस खुब उपयोगी है। इस लिए बारहमासी नींबू की खेती कर के अच्छा मुनाफा के हेतु भी बारहमासी नींबू की खेती करते है।

बारहमासी नींबू की खेती उपयुक्त मिट्टी

बारहमासी नींबू की खेती सभी प्रकार की मिट्टी में कर सकते है लेकिन अच्छी वृद्धि एवं अच्छी उपज के पैदावार प्राप्त करने के लिए बारहमासी नींबू की खेती ज्यादा तर बलुई दोमट मिट्टी और रेतीली मिट्टी में अच्छी वृद्धि और अधिक पैदावार देते है। मिट्टी में बारहमासी नींबू के पौधे की बुवाई या रोपाई करे वही जमीन की जल निकासी अच्छी होनी चाहिए। और उस जमीन का P.H मान 5.5 से 7.5 के बिच का होना चाहिए। ज्यादा ठंड के मौसम में पड़ने वाला पाला बारहमासी नींबू के पौधे को नुकशान पहुचाता है।

- बारहमासी नींबू की खेती में जमीन तैयारी में एक से दो बार गहरी जुताई करनी चाहिए। आखरी

राधा, एवं डॉ. अतुल यादव
शोध छात्रा, फल विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या
सहायक प्राध्यापक, फल विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

जुताई से पहले वर्मीकम्पोस्ट या तो सड़ा हुआ गोबर एक हेक्टर में 12 से 15 टन डाल के अच्छे से मिट्टी में मिला देना चाहिए।

- जमीन तैयारी में आप गहरी जुताई कर के पट्टा चला के जमीन को समतल कर लीजिए क्यों की ज्यादा पानी भाराव जमीन में बारहमासी नींबू के पौधे अच्छे से विकास नहीं करते और उपज भी अच्छी नहीं प्राप्त कर सकते है।
- इस लिए जमीन की जल निकासी अच्छे से हो सके इस लिए पाट्टा सला के जमीन समतल अवश्य कर लेनी चाहिए। बाद में अच्छी प्रसिद्ध किस्मे की बुवाई कर सकते है।

बारहमासी नींबू की खेती में तापमान और जलवायु

बारहमासी नींबू की खेती उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय दोनों मौसम में कर सकते है। बारहमासी नींबू के पौधे को 25°C से 30°C तापमान सब से ज्यादा अनुकूल आता है। और एक साल में बारिश 80 से 190 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

- ज्यादा बारिश बारहमासी नींबू के पौधे को नुकशान पहुचाते है। और जब ज्यादा ठंड पड़ती है तब ठंड के कारण पाला भी पड़ते है वही पाला बारहमासी नींबू के पौधे की वृद्धि रोक देता है और उपज में भारी गिरावाट देखने को मिलेगी।
- बारहमासी नींबू की खेती में अर्ध शुष्क जलवायु या तो गर्म एवं नम जलवायु खुब अनुकूल मानी जाती है। ज्याद ठंड वाला मौसम के ज्यादा बारिश वाला मौसम बारहमासी नींबू के पौधे के लिए अनुकूल नहीं होता है।

बारहमासी नींबू की उन्नत किस्में

बारहमासी नींबू की खेती में हमारे कृषि संशोधकों द्वारा कई उन्नत किस्मे या प्रसिद्ध वेराइटी का शंसोधन किया है। इन में से कुछ नाम है। कागजी नींबू , बारामासी, मीठा नींबू , प्रमालिनी, विक्रम किस्मे का नींबू, चक्रधर, और साई सरबती इस प्रकार के नींबू के पौधे की प्रसिद्ध किस्मे है।

इन सभी किस्मे में से कागजी नींबू सब से ज्यादा लोक प्रिय किस्मे है। इस की खेती हमारे देश भारत में सब से ज्यादा की जाती है और उपज भी अच्छी प्राप्त होती है।

- **कागजी नींबू :** इस किस्मे के पौधे साल भर में दो बार भारी मात्रा में उपज देते है। इस किस्मे की खेती सबसे ज्यादा हमारे देश में किशान करते है। इस किस्मे के नींबू के फल में 50% से 55% रस मौजूद होते है। और एक पौधे से 55 से 60 किलोग्राम नींबू के फल प्राप्त कर सकते है। इस का फल थोड़ा छोटा होता है।
- **बारामासी नींबू :** इस किस्मे के पौधे साल भर में दो बार फल देते है। इस किस्मे के नींबू के पौधे में फल फरवरी, मार्च और जुलाई, अगस्त माह में आते है। इस किस्मे के पौधे से 60 से 65 किलोग्राम फल प्राप्त कर सकते है।
- **मीठा नींबू :** इस किस्मे की कोई विशेष नहीं होती। इस किस्मे के नई पौधे कलम के द्वारा तैयार करते है। इस में फल की मात्रा अधिक होती है। इस के फल के उपज की बात करे तो एक पौधे से 350 से 550 किलोग्राम फल प्राप्त कर सकते है।
- **प्रमालिनी नींबू :** इस किस्मे की खेती व्यपारिक रुप से की जाती है। इस के पौधे पर नींबू ज्यादा आते है। इस के उपज की बात करे

तो एक पौधे से 65 से 70 किलोग्राम फल प्राप्त कर सकते है।

- **विक्रम नींबू :** इस किस्मे के पौधे से फल बहुत अधिक मिलते है। इस किस्मे के पौधे में फल भरी मात्रा में मिलते है। इस किस्मे के पौधे से एक गुच्छे से 8 से 10 फल मिलते है। इस किस्मे में फल तो साल भार आते है। इस किस्मे की खेती पंजाब में बहुत करते है और बारामासी के नाम से भी जानते है।
- **चक्रधर नींबू :** इस किस्मे को कागजी से प्राप्त की गई किस्मे है। इस के फल के छिलके पतले होते है। और इस फल में रस की मात्रा 60% से 65% मिलती है। इस किस्मे की उपज कागजी किस्मे से अधिक आती है और इस में एसिड की मात्रा अधिक होती है।
- **साई सरबती नींबू :** इस किस्मे के पौधे बहुत बड़े होते है और इस में उपज भी भारी मात्रा में प्राप्त होती है। इस के आलावा इस किस्मे में रोग प्रतिकारक शक्ति बहुत ज्यादा होती है।

बारहमासी नींबू की बुवाई

बारहमासी नींबू की खेती ज्यादा बारिश में नहीं करनी चाहिए। माध्यम बारिश में बारहमासी नींबू के पौधे की बुवाई करने से पौधा तेजी से विकास करता है और जैसे की जुलाई की शुरु आत में यतो सितंबर के अंत में बुवाई करनी चाहिए।

- बारहमासी नींबू की बुवाई दो तरीके से कर सकते है। एक तो बीज की बुवाई कर के और नर्सरी से पौधे खरीद के। लेकिन जब बारहमासी नींबू के बीज की बुवाई करे तब वक्त ज्यादा लगता है और महेनत भी काफी लगती है। और जब पौधे की बुवाई करे तो जल्द नींबू के पौधे विकास करते है।
- इस में महेनत भी कम लगती है। नर्सरी से पौधे ख़रीदे पौधा एक से डेढ़ माह के पुराने होना चाहिए। और पौधा स्वस्थ और निरोगी होना चाहिए।
- बारहमासी नींबू की खेतीमें पौधे से पौधे की दुरी 10X10 या तो 15X15 रखनी चाहिए। इस के बुवाई में 60 से 70 सै.मी. चौड़ा और गहराई 55 से 65 सै.मी. रखनी चाहिए। इस खड्डे में देशी खाद में गोबर और मिट्टी में अच्छे से मिला के खड्डे को भर देना होगा और इस के खड्डे एक हेक्टर के हिसाब से 610 से 620 खड्डे कर सकते है।

बारहमासी नींबू की खेती में खरपतवार

बारहमासी नींबू की खेती में खरपतवार अच्छे से करना होगा खरपतवार नियंत्रण रखना बेहद जरूती है जब खरपतवार नियंत्रण नहीं रखते तब मुख्य बागबानी में से पैदावार कम हो जाती है और उपज में भारी गिरावाट देखने को मिलेगी।

इस खरपतवार में आप खुरपी का इस्तेमाल कर सकते है और रासायनिक दवाई का भी उपयोग कर शकते है। लेकिन हमारा सुझाव है खरपतवार खुरपी से ही करे रासायनिक दवाई का उपयोग करने से जमीन का P.H मान कम हो जाता है और मुख्य फसल या बागबानी से उपज कम प्राप्त कर सकते है। इस लिए खुरपी से खरपतवार करना बेहद जरूरी है।

बारहमासी नींबू की देखभाल

बारहमासी नींबू की खेती में समय से सिंचाई करनी चाहिए। जब बारहमासी नींबू के पौधे पर कोई रोग

या कीट का अटेक दिखाई दे तब इस रोग एवं कीट नियंत्रण के लिए योग्य दवाई का छिटकाव कर के पौधे को रोग या कीट मुक्त करना चाहिए।

जब फूल फल बारहमासी नींबू में आने लगते है तब बारहमासी नींबू के पौधे को सिंचाई की आवश्कता अधिक होती है अच्छे फूल और फल की वृद्धि के लिए इस प्रकार बारहमासी नींबू की खेती में देखभाल रखनी चाहिए।

बारहमासी नींबू में सिंचाई

बारहमासी नींबू की खेती में पानी की आवश्कता बहुत कम होती है क्यों की जब पौधे की बुवाई करते है तब हलकी बारिश के कारण सिंचाई बहुत कम करनी चाहिए। बारहमासी नींबू के पौधे बड़े हो जाए और इस पौधे में फूल फल आने लगे तब सिंचाई जरूरी मात्रा में करनी चाहिए। नींबू के फल में रस की मात्रा अधिक करने के लिए 10 से 15 दिन के अंतर में दो से तीन बार हल्की सिंचाई करनी चाहिए। जब सर्दी के मौसम है तब नींबू के पौधे को जरूर सिंचाई करे। सर्दी के मौसम में पड़ ने वाला पाला नींबू के पौधे को बहुत हानि पहुचाता है और पोधे का विकास रूक जाता है।

बारहमासी नींबू में खाद

- बारहमासी नींबू की खेती में खाद में आप वर्मीकम्पोस्ट, सड़ा हुआ गोबर इन के आलावा नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश,S.S.P, M.O.P. जिंक, सल्फर, मिक्स माइक्रोन्यूट्रियन्स, इस प्रकार के खाद हम बारहमासी नींबू की खेती में दे सकते है।
- लेकिन जब नींबू के पौधे की बुवाई करे तब एक पौधे को कम से कम 5 - 6 किलोग्राम देशी खाद में गोबर के खाद दे और दूसरे साल इन से दुगना और बारहमासी नींबू में जब फूल फल आने लगे तब इन के आलावा भी ऊपर दिया गई खाद दे सकते है।
- बारहमासी नींबू के पौधे को साल में दो से तीन बार खाद डाल सकते है। खाद फरवरी एवं जून और सितंबर महीने में डालना चाहिए। ताकि नींबू के पौधे की अच्छी वृद्धि एवं पौधे पर लगे फूल फल की भी अच्छी विकास हो।
- बारहमासी नींबू के पौधे को योग्य समय खाद डालने से नींबू की पैदावार में बडोतरी देखने को मिलेगी और प्रत्येक पौधे से साल में 25 से 35 किलोग्राम तक की उपज प्राप्त कर सकते है।

बारहमासी नींबू की खेती में लगने वाले रोग एवं कीट नियंत्रण

बारहमासी नींबू की खेती में कुछ इस प्रकार के रोग एवं कीट लगते है इन के नाम इस प्रकार के है काले धब्बे का रोग, सिटरस सिल्ला, सफेद धब्बे का रोग, पत्ते का सुरंगी कीट, गोंद रिसाव रोग, स्केल कीट, चेपा और मिली बग, कैंकर रोग, रस चूसने वाले की, इस रोग एवं कीट का उपचार जल्द से जल्द करना चाहिए।

जिंक की कमी : इस की कमी से पतों पीले रंग के और पतों पर शिरा हो जाता है। इस के कारण जड़ गलन और सखाए जाडी हो जाती है। इस की कमी से फल में वजन भी कम हो जाता है इस के नियंत्रण में आप जिंक 33% FMC कंपनीका उपयोग में ले शक्ति है इस को एक हेक्टर के हिसाब से 2 से 2.5 लीटर पानी में मिला के सिंचाई के माध्यम से पौधे को देनी चाहिए। और इस को आप छिटकाव भी कर सकते है

कैंकर रोग : जब इस रोग के अटेक नींबू के पौधे में दिखाई दे तब पौधे पर स्ट्रेप्टोमाइसिल सल्फेट कि

40 ग्राम 16 लीटर पानी में मिला के 10 दिन के अंतर में दो बार छिटकाव करना चाहिए।

सिटरस सिल्ला : ए एक पौधे के पतों और नई अंकुरित हुई सखा को नुकशान पहूचाता है। ए पौधे के पतों और पौधे दोनों पर एक तरल पदार्थ छोड़ता है और इस पदार्थ के कारण पौधे का छिलका और पतों भी जल जाते है। इस के कारण पतों ऊपर की दिशा में मूड जाते है और पता पौधे से पक ने से पहले जमीन पर गिर जाता है। इस के नियंत्रण के लिए पौधे की पतों की कटाई कर के और पतों को जला के नियंत्रण कर शकते है। इस के आलावा मोनोक्रोटोफॉस 0.025% या कार्बारिल 0.1% को 30 ग्राम 16 लीटर पानी में मिलागोल के छिटकाव करना चाहिए।

चेपा और मिली बग : इस कीट का मुख्य कार्य है पौधे में से रस चूस लेते है। इस कीट को आप पतों के अंदर दिखाई देते है। इस कीट के नियंत्रण में आप पाइरीथैरीओड्स 30 से 40 ग्राम 16 लीटर पानी में मिला के छिटकाव कर सकते है।

बारहमासी नींबू की खेती में उपज एवं तोड़ाई कब करे ?

बारहमासी नींबू की खेती में नींबू को हम खाने पीने में उपयोग में लेते हे इस के आलावा सौंदर्य में और कई रोग एवं बीमारी के दवाई के रुप में भी इस्तेमाल करते है। उपज की बात करे तो अगर आप ने एक हेक्टर में नींबू की खेती की है तो आप 610 से 620 पौधे लगा सकते है।नींबू के पत्येक पौधे एक साल में कम से कम 50 से लेकर 60 किलोग्राम तक का उपज देते है। बाजार भाव 20 से 70 रुपए एक किलोग्राम के हिसाब में मिलते है। और। इस भाव के हिसाब से साल भार में बारहमासी नींबू की खेती कर के एक साल में 5.5 से लेकर 6.5 लाख की कमाई कर सकते है।बारहमासी नींबू की खेती में तोड़ाई पूरा साल भार रहती है। इस के पौधे साल भर तोड़ाई देते रहते है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE